साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 3, अंक 50, दिसम्बर(प्रथम) , 2018

जल भाप के रूप में रूपांतरित हो तब बादल बनेगा
व्यक्ति करुणशील के रूप में रूपांतरित हो तब मनुष्य बनेगा।

लेखक: आचार्य विजयराजरत्नसूरि
अनुवादक: डॉ. रजनीकान्त एस.शाह

कुछ पंक्तियाँ ऐसी तो कलात्मक होती हैं और उनकी प्रस्तुति ऐसी असरदार होती है,कि उन्हें पढ़ते ही अंतस्तल को छू लेती हैं और अनायास ही अंतर के संगेमरमर पर अंकित हो जाती हैं। अभी श्री.गौरांग ठाकर की ऐसी छोटी तथापि असरदार पंक्तियाँ पढ़ी। गौरांग की ये पंक्तियाँ कहती हैं:

`जल से भाप हुई,बाद में बादल हुआ जाता है।
मुझमें क्या होने के बाद मनुष्य हुआ जा सकता है?'

जल का स्थान वैसे तो धरती पर होता है। सरोवर-सरिता या सागर: किसी भी स्वरूपवाला जल आकाश में अधर में नहीं,धरती पर होता है और पृथ्वी के स्तर से कुछ नीचे होता है। वही जल जब भाप के रूप में रूपांतरित होकर ऊपर ऊंचे चढ़ता जाता है और आकाश में बादल के रूप में स्थान-सम्मान पाता है। जल की इस उन्नतियात्रा को लक्षित करके उपरोक्त पंक्ति अनुत्तरित प्रश्न करती है कि यदि जल में भाप के रूप में परिवर्तन आये तो वह बादल बनता है,ठीक वैसे ही हमारे अंदर कौन-सा परिवर्तन आये तो हम सही मानों में मनुष्य बन जाएँ?
याद रहे कि मनुष्य के रूप में सुंदर देह मिल जाये,इतने मात्र से सही मानों में मनुष्य नहीं बन जाया जाता। शरीर रचना की दृष्टि से मनुष्य होना अलग बात है। कवि निरुत्तर प्रश्न द्वारा हमारी चेतना को उस दिशा में सोचने का निर्देश करता है।

हमें यदि उस निरुत्तर प्रश्न का उत्तर देना हो तो हम तुरंत कह दें कि जल भाप के रूप में रूपांतरित हो तो बादल बन जाये, इसी प्रकार,व्यक्ति दयालु-करुणाशील रूप में परिवर्तन प्राप्त करे तो सही अर्थ में मनुष्य बन जाये और साथ ही साथ यह भी अवश्य होगा कि भाप बनने के बाद जिस तरह जल उसकी मूलभूत दशा की अपेक्षा अनेकगुना उन्नत अवस्था को गुणात्मक दृष्टि से प्राप्त करता है। उसी प्रकार दयालु-करुणावन हो जाने के पश्चात्त व्यक्ति भी उसकी मूल अवस्था की अपेक्षा कईं गुना उन्नत अवस्था गुणात्मक दृष्टि से प्राप्त करता है। याद रहे,कि मनुष्य यदि केवल कोरा(निरा) बुद्धिमान होगा तो कदाचित स्वार्थान्ध होकर शयतान भी बन सकता है,या मात्र संपत्तिवान होगा तो दुराचारी बनकर - स्वकेंद्रित होकर हैवान भी बन सकता है,परंतु यदि वह संवेदनायुक्त दयालु-करुणशील होगा तो सही मानों में इंसान बन जायेगा और आगे चलकर भगवान भी बन सकता है।

अठारह पुराणों में महर्षि व्यास द्वारा प्रस्तुत समग्र उपदेश का सारांश मात्र आधे श्लोक में प्रस्तुत करनेवाला एक श्लोक संस्कृत में अति प्रसिद्ध है। उसमें सार रूप दर्शित श्लोकार्द्ध यह है:-

`परोपकार: पुण्याय,पापाय परपीडनं '

अर्थात् अन्य के प्रति उपकार करना पुण्य का कारण बनता है और अन्य को परेशान करना-पीड़ा देना पाप का निमित्त बनता है। यह है अठारह पुराण का सारांश!! हम इनमें से उपकार की बात को ऐसे तीन स्तरों पर दिखाएंगे कि जिनमें कारण रूप में `क' अक्षर से शुरू होनेवाला एक एक गुण हो और उसमें भी सबसे पहले गुण के रूप में ऊपर दिखाये अनुसार वह करुणावृत्ति-दयाशीलता हो:
प्रथम स्तर है,उपकार करना। ऊंचे ऊंचे बांस के जंगलों में ऐसा देखने को मिलता है कि बांस का एक वृक्ष जड़ से अलग पड जाये तो उसके आसपास के निकट रहे बांसवृक्ष उस बांसवृक्ष के सहायक होकर उसे टिकाये रखते हैं,गिरने नहीं देते। निष्क्रिय माने जानेवाले बांसवृक्ष भी यदि अपने जातिबंधु के इस प्रकार सहायक हो,उपकारक हो तो मनुष्य मनुष्य पर उपकार क्यों नहीं करे? अवश्य उसे अन्य

दु:खी-पीड़ितों पर उपकार करना ही चाहिए। अत: प्रथम स्तर यह दिखाया है कि उपकार करना चाहिए।

उपकार करने के लिए `क' अक्षर से शुरू होनेवाले `करुणा' गुण को देखेंगे। करुणा-मानवता-हमदर्दी(सहानुभूति) हो तभी व्यक्ति समय का-शक्ति का या संपत्ति इत्यादि का बलिदान नि:स्वार्थभावपूर्वक देकर दु:खी-दीन-कमजोर व्यक्ति का उपकारक-सहायक हो सकता है। मानों कि एक धनवान व्यक्ति कर्ज के भार तले दबे-कुचले जा रहे गरीब व्यक्ति की निरपेक्ष भाव से संपत्ति की सहायता करे या कोई सेवाभावी व्यक्ति दुर्घटना में घायल हुए व्यक्ति को नि:स्वार्थ भाव से हस्पटाल तक पहुंचाये तो उसके पीछे करुणा-सहानुभूति नामक तत्त्व ही कारणरूप है। उसके अतिरिक्त नि:स्वार्थ उपकार संभव नहीं होता।

दूसरा सोपान है- उपकार को समझा जाये। मान लो, कि किसी व्यक्ति ने कठिन परिस्थिति में सहायता करके हमें मुश्किलों से बचाया हो,तब हमारा `मतलब निकाल गया तो पहचानते नहीं वाला' अभिगम नहीं होना चाहिए परंतु आभार-उपकार के भावों से छलकता हुआ अभिगम होना चाहिए। हमारी रोज़मर्रा की जिंदगी में भी हररोज अनेक व्यक्तियों के छोटे-बड़े अपेक्षापूर्ण या निरपेक्ष उपकार हमारे ऊपर होते रहते हैं। कदाचित ऐसा भी हो कि उनमें से महदांश उपकारों को हम उपकार के रूप में समझते या स्वीकार नहीं करते हैं। ऐसे में `आभारवृत्ति' का तो सवाल ही कहाँ?

उपकार समझने के लिए `क' अक्षर से शुरू होनेवाला गुण है कृतज्ञता। कृतज्ञता को सार्थक रूप में और संक्षेप में यदि समझाना है तो ऐसा कहा जा सकता है, कि जिन सिढियों को चड़कर हम मंदिर में,ऑफिस में या घर में प्रविष्ट होते हैं उन सीढ़ियों का भी ऋणस्वीकार करने की वृत्ति का विकसन होना चाहिए,क्योंकि उनके बिना हम कहीं भी पहुँच नहीं पाते!!!

तीसरा सोपान है,उपकार का प्रत्युपकार के रूप में प्रतिदान करना। मानों कि किसीने हमारे साथ महत्त्वपूर्ण उपकार किया हो तो `थैंक यु' या `आभार' जैसे शब्दों से हमारा कर्तव्य पूरा नहीं हो जाता। कईंबार ऐसा पाया जाता है,कि सामनेवाले

व्यक्ति के उपकार के बदले में व्यक्ति सहायता प्रतिदान के लिए औपचारिक विवेक दिखाये और सामनेवाला व्यक्ति यदि अस्वीकार करे तो खुशी खुशी बात को खत्म कर दे। वस्तुत: उपकार के सामने यथासंभव प्रत्युपकार तो होना ही चाहिए। उसके लिए `क' अक्षर से शुरू होनेवाला गुण है-`कर्तव्यनिष्ठा।' व्यक्ति यदि कर्तव्यनिष्ठ हो तो `येन केन प्रकारेण' प्रत्युपकार करेगा ही।

ये तीनों सोपान और तीनों गुण हृदयस्पर्शी रूप में एकसाथ अनुभव किये जाये ऐसी एक दास्तां जानना चाहते हैं?तो सुनिए यह सच्ची घटना।

ब्रिटन का एक छोटा सा गाँव। उसके बाहर मुख्य मार्ग को छूता हुआ एक किसान का छोटा सा घर था। उसके पीछे उसका ऐसा ही एक छोटा सा खेत था। एकबार वह उस घर में कुछ मरम्मत कर रहा था। तब नजदीक में से `बचाओ,बचाओ' की दर्दभरी और घबराई हुई सी आवाजें आने लगीं। मरम्मत का काम अधूरा छोड़कर वह दौड़ता हुआ बाहर गया। उसने देखा कि साइकिल पर जा रहा एक किशोर अचानक नीचे लुढ़ककर दलदली गड्ढे में जा गिरा। जैसे जैसे वह बाहर निकलने के लिए ज़ोर लगाता था वैसे वैसे वह अंदर ही अंदर धँसता जा रहा था। कमर से भी ज्यादा अंदर धंसे हुए उस किशोर को मानों अपनी मौत प्रत्यक्ष नजर आने लगी। अत: मारे घबराहट के वह चीख रहा था।

किसान के हृदय में करुणा का सोता बहने लगा। उसने नि:स्वार्थ उपकार की भावनावश उस किशोर को दलदल से सहीसलामत रूप से बाहर खींच निकाला और उसे भयमुक्त किया।

कृषकपत्नी ने किशोर के कीचड़ से सने कपड़ों को धो दिया, उसके लिए नहाने की व्यवस्था कर दी और उसे कुछ खिलाया-पिलाया भी। अनजान गरीब दंपती का ऐसा नि:स्वार्थ स्नेह देखकर वह किशोर अत्यंत प्रभावित हुआ। कपड़े सूख जाने के बाद चलते समय वह किशोर उस किसान को अपना पता देकर गया।

वस्तुत: वह किशोर कृतज्ञबुद्धि और अमीर परिवार की संतान थी। उसने अपनी जान बचानेवाले किसान से संबन्धित सारी बात अपने पिता से ऐसे प्रभावक

ढंग से कही,कि दूसरे ही दिन उसके पिता उस किसान के पास जाने के लिए तत्पर हो गये। दूसरे दिन मध्याह्न वेला में किसान के आँगन में एक वैभवी `कार' आकर खड़ी हो गई और उसमें से वह किशोर उसके पिता के साथ बाहर आया।

अमीर उद्योगपति ने उस किसान का खूब धन्यवाद किया और पुत्र की जान बचाने के उपकार के प्रतिदान के रूप में पाउंड के नोटों की बड़ी गड्डी किसान के समक्ष फैलाई,पर वाह रे किसान! उस गरीब छोटे से झोंपड़े में रहनेवाले अमीरदिल मनुष्य ने उपकार के सामने पैसे स्वीकार करने से साफ इनकार कर दिया। उसने कहा कि: ``मैंने करुणा से प्रेरित होकर यह उपकार किया है,पैसों के लिए नहीं।''

वह अमीर उद्योगपति भी कर्तव्यनिष्ठ थे। वे भी किसी भी तरह इतने बडे उपकारी किसान पर प्रत्युपकार करने के लिए कटिबद्ध थे। वह दिलावर किसान पैसे लेने के लिए राजी हुआ ही नहीं तो उस उद्योगपति ने उसके छोटे बेटे के लिए एक नया प्रस्ताव रखा।`तुम्हारा यह दसवर्षीय बेटा यदि तुम्हारे घर में ही रहेगा तो जीवनभर खेत-मजदूरी ही करेगा तुम यदि उसे मेरे साथ भेज दो तो मैं उसका अपने पुत्र की भांति लालनपालन करूंगा। उसे पढ़ा-लिखकर उसकी जिंदगी बदल दूंगा। बस,इतना सा प्रत्युपकार करने का तुम मुझे मौका दो।'

किसान ने इस प्रस्ताव का स्वीकार कर लिया। उद्योगति उस कृषकपुत्र को अपने साथ घर ले गये। संयोग से वह कृषक बालक होनहार और तेजस्वी निकला। लंदन स्थित सेंटमेरी हॉस्पिटल और मेडिकल स्कूल में तैयार होकर उसने श्रमसाध्य आविष्कारों के बाद एक ऐसी नयी दवाई ईजाद की, जिसने लाखों मरीजों की जानें बचाई और उस पुत्र ने विश्वव्यापी यश अर्जित किया। बरसों बाद उस अमीर उद्योगपति का बेटा न्यूमोनिया की बीमारी की चपेट में आ गया तब इसी कृषकपुत्र द्वारा आविष्कृत दवाई से उसकी जान बची थी।

उस कृषकपुत्र का नाम सर एलेक्झांडर फ्लेमिंग। उनके द्वारा आविष्कृत दवाई का नाम है पेनेसिलिन।उसे पढ़ानेवाले अमीर उद्योगपति का नाम लॉर्ड रैंडोल्फ़ चर्चिल और किसान परिवार के कारण दो दो बार नवजीवन प्राप्त करनेवाले पुत्र अर्थात् विश्वविख्यात राजनेता ब्रिटिश प्रधानमंत्री सर विंस्टंट चर्चिल!!

अंत में एक बात: धरती में रोपा गया बीज कभी भी फलता है,उसी प्रकार जीवन में किये गये नि:स्वार्थ परोपकार कभी भी फलते हैं।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें